International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 07-01-2021, Accepted: 23-02-2021, Published: 01-04-2021
Volume 7, Issue 2, 2021, Page No. 61-64

जासूसी और गोपालराम गहमरी

नीरुत्पल बोरा

एम. फील, हिन्दी भवन, विश्व-भारती, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल, भारत

सारांश

जासूसी उपन्यास नवयुग की देन है, परन्तु जासूस नहीं। संस्कृत में जासूस को 'चर' अथवा 'गुप्तचर' कहते हैं। 'अर्थशास्त्र' के रचयिता चाणक्य ने राजनीति में गुप्तचरों के महत्व की व्याख्या की है और गुप्तचरों राजा की एक विशेष शक्ति माना है। जासूसी उपन्यास हिन्दी साहित्य के लिए नई चीज था, इसका आगमन युरोप से बंगाल होता हुआ हिन्दी क्षेत्र में विकास हुआ। जितने जासूसी उपन्यास उपलब्ध हैं उनके विषय में निश्चयपूर्वक यह कहना कि सर्वथा मौलिक है, असंभव है, क्योंकि उनमें से अधिकतर का बीज किसी न किसी प्रकार बाहर से आया है। जासूसी उपन्यासों के प्रवर्तक तथा सर्वश्रेष्ठ लेखक गोपालराम गहमरी हैं। उन्होंने लगभग डेढ़ सौ उपन्यास लिखे हैं। इनमें से जो जासूसी हैं उनके विषय में यह कहना संभव नहीं कि उनमें कितनी मौलिकता है, कितनी छाया और कितना अनुकरण। उनके अधिकतर उपन्यास घटनात्मक हैं फिर भी लेखक का उद्देश्य मंगल-वर्षा रहा है, वह समाज का सुधार करना चाहता है। जासूसी उपन्यास तिलस्मी उपन्यासों की अपेक्षा जीवन के अधिक निकट है। लेखक की भाषा सरल तथा लोकप्रिय होते हुए भी तत्सम शब्दावली का अधिक ध्यान रखती है। जासूसी होते हुए भी इन उपन्यासों में कोई अग्राह्य नहीं है, रहस्य-मात्र का उद्घाटन एवं सत्कर्म का उपदेश उपन्यासकार का उद्देश्य रहा है। उपन्यासों के लिए अंग्रेजी में जिस प्रकार के जासूसी पात्र बनाया गया वे अपराध का पता लगाने वाले थे। इसीलिए जासूसी उपन्यास को 'पुलिस नावेल' भी कहते हैं। राष्ट्रभाषा संबंधी और हिन्दी साहित्य संबंधी तथा खड़ीबोली को लेकर बहस कि शुरूआत उन्होंने अपने पत्रिका, निबंध और लेखों के माध्यम से प्रकट किया है। गहमरीजी ने काव्य में सामाजिक, राजनीतिक, यथार्थ, आर्थिक, तथा शैक्षणिक समस्याओं को प्रकट किया है । विभिन्न समस्याओं को केंद्र में रखकर सामाजिक नीतिमत्ता तथा मानवीय मूल्यों और गहमरीजी को सिर्फ जासूसी उपन्यासकार ही नहीं, बल्कि एक सच्चे हिन्दी सेवी साहित्यकार के रूप में स्थापन करना उनका उद्देश्य रहा है । अनूदित साहित्य के माध्यम से हमारे साहित्य कि कक्षा विस्तृत करना, भारतीय संस्कृति और गहमरीजी के गद्य साहित्य में चित्रित विचारों को स्पष्ट करना, ब्रिटीशकलीन भारतीय जनजीवन को पत्रकारिता के यतहरथ रूप में दिखाना आदि इस शोध कार्य का उद्देश्य रहा है।

मूल शब्द: जासूस, गुप्तचर, रहस्य, मंगल-वर्षा

प्रस्तावना

जासूसी कहानियाँ पढ़ना तो सबको तथा ज्यादातर लोग पसंद करते हैं, लेकिन जासूसी के बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। जासूसी कोई कठिन कार्य नहीं है और न ही जासूस कोई असाधारण व्यक्ति होता है। जासूसी करना खतरनाक अवश्य है, पर जासूस भी हमारी और आपकी तरह एक साधारण व्यक्ति ही होता है। परन्तु इस कला की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात वह अवश्य एक असाधारण व्यक्ति बन जाता है। जासूसी एक ऐसा विज्ञान तथा विशेष ज्ञान है, जिसे एक साधारण पढ़ा लिखा व्यक्ति भी सीख सकता है। इस के लिए बड़ी बड़ी डिग्रियो की आवश्यकता नहीं होता।पर उस साधारण व्यक्ति को जासूस बनने के लिए साहसी, दृढ़ निश्चयी और हाजिर दिमाग होना जरूरी है। जासूसी का इतिहास बहुत पुराना है। अपने रोमांचक व विस्मयकारी

कारनामों के कारण हमेशा यह आकर्षण का विषय रहा है। जासूसों का हर तरीका व कार्यविधि भी हरबार नई ही होती है। काव्य साहित्य के क्षेत्र में जासूसी विधा की शुरुआत 18वी सदी से हुआ है।अंग्रेजी और बांग्ला साहित्य में ही सर्वप्रथम जासूसी उपन्यास, कहानी का शुरुआत हुई। हिन्दी साहित्य में जासूसी विधा को गोपालराम गहमरी जी ने पाठकों के सामने लाया। गहमरी जी अंग्रेजी और बांग्ला साहित्य से काफी प्रभावित थे।अंग्रेजी साहित्यकार आर्थर कानन डायल से प्रभावित हुए। बांग्ला साहित्यकारनरेन्द्र नाथ गुप्त के "हीरार मूल्य" कहानी का पहली बार "हीरे के मौल" नाम से गहमरी जी ने हिन्दी में अनुवाद किया। जो लोगों ने काफी पसंद किया।

गोपालराम गहमरी ने हिन्दी साहित्य में जासूसी उपन्यास की परम्परा की नींव रखी। इन्होंने अपने उपन्यासों के लिए सांसारिक और विश्वसनीय घटनाओं की सुन्दर योजना की हैं। उनके समय में ब्रिटिश गुप्तचर विभाग काफी सक्रिय हो चुका था।जासूसी उपन्यासों में अपहरण, हत्या, डाका या चोरी आदि का अत्यंत कौशल, सूक्ष्म परीक्षणऔर विश्लेषण करके पता लगाने वाले नये साहित्यिक नायक जासूस की सृष्टि की।

गोपालराम गहमरी जी को जासूसी विधा में रुचि उनके द्वारा अनुदित कहानी "हीरे के मौल" से बनी। उन्होंने अनुदित कहानी की लोकप्रियता और अपनी मुखविरी द्वारा बम्बई में महंत बने एक ख़ूनी धोबी की गिरफ्तारी से प्रभावित होकर गहमरी जी की रुचि जासूसी उपन्यासों की ओर बढ़ी।गहमरी जी ने हिन्दी में साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक, तिलस्मी और जासूसी उपन्यास भी लिखे। किन्तु इनको हिन्दी साहित्य में ख्याति जासूसी उपन्यासकार के रूप में प्राप्त हुई। हिन्दी साहित्य में आधुनिक युग में उन्होंने अनेक जासूसी उपन्यासों की रचना की। जासूसी और तिलस्मी घटना प्रधान उपन्यासों का इस युग में बोलबाला था। सरल बोलचाल की भाषा का प्रयोग कर गहमरी जी ने उपन्यास विधा को लोकप्रिय बनाया।

भारतेन्दु युग में गहमरी जी ने जासूसी उपन्यास, कहानियाँ लिखना शुरू किया, पर द्विवेदी युग में बहुसंख्यक जासूसी उपन्यास लिखा। जासूसी उपन्यासों में भी घटनाएं रहस्यरंजित होती थी, इसलिए उन्हें अधिक से अधिक विश्वसनीय बनाने की चेष्टा की जाती थी।गहमरी जी ने अनुदित कहानी, उपन्यासों के साथ ही कविता, नाटक, निबन्ध, संस्मरण आदि पर भी लेखनी चलाई।गहमरी जी ने आर्थर कानन डायल के प्रसिद्ध उपन्यास "ए स्टडी इन स्कारलेट" (1887) को "गोविन्दराम" (1905) शीर्षक से हिन्दी में रूपांतरित किया। सरकटी लाश (1900), चक्करदार चोरी (1901), जासूस की भूल (1901), जासूस पर जासूसी (1904), जासूस चक्कर में (1906) इन्द्रजालिक जासूस (1910), गुप्तभेद (1913), जासूस की एयारी (1916) आदि उनके प्रसिद्ध उपन्यास है। साथ ही 'गेरुआ बाबा'उनके द्वारा लिखित लघु उपन्यास है।

प्रेमचंदपूर्व उपन्यास युग में काव्य रचना की उद्देश्य मनोरंजन करना था, पर गहमरी जी के उपन्यासों में मनोरंजन के साथ ही रहस्यात्मक, सामाजिक, नीतिपरक विचार भी निहित हैं। जिस तरह आर्थर कानन डायल की सृष्टि शारलोक होम्स है, सारदेन्दु बंदोपाध्याय के ब्योमकेश बक्शी है, जो जासूसी विधा को एक नयी धारा में प्रवाहित करता है, उसी तरह गोपालराम गहमरी के कहानी उपन्यासों में भी एक नायक, जो मूल रूप से जासूस होता है। वह हर उपन्यास या कहानी में अलग-अलग नाम से परिचित होते हैं। आर्थर और सारदेन्दु जी की तरह एक प्रमुख व्यक्तित्व की अधिकारी गहमरी जी के काव्य में स्थान काल के आधार पर अलग-अलग नाम से सामने आते हैं। शायद वही एक कारण हो सकता है! जिसके लिए गहमरी जी की काव्यों को लोगों ने भुला दिया हो।

एक मूल नायक प्रसिद्ध नाम से परिचित होने से पाठकों को हमेशा याद रहते हैं, लेकिन नाम बदलते रहने से पाठकों के आकर्षण कम होने लगते हैं। क्योंकि जगह, विषयवस्तु के साथ नायक तथा जासूस का नाम भी काव्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। गहमरी जी के उपन्यास या कहानी बुनियादी विषयों से परिपूर्ण है, जहाँ भारत के हर एक जगह का यथार्थ चित्रण देखने को मिलता है। उनके समय में हो रहे घटनाओं को काव्यिक रूप देने की कोशिश की और उन्हें खुद भी जीवन में ऐसे कुछ घटनाओं को सामना करना पड़ा, जो इसी प्रकार के डाकू, चोरों के मुठभेड़ को अपने रचनाओं के विषय के रूप में प्रस्तुत किया है। गहमरी जी का कहना है कि-जिसका उपन्यास पढ़कर पाठक ने समझ लिया कि सब सोलह आने सच है, उसकी लेखनी सफल परिश्रम समझने चाहिए।

गोपालराम गहमरी के हिन्दी साहित्य और पत्रकारिता के विकास में अतुलनीय और अविस्मरणीय योगदान रहा है। 38 साल तक आपने बनारस और फिर अपने गाँव गहमर से 'जासूस' नामक मासिक पत्र का सम्पादन और प्रकाशन

किया। भारत भूषण, बिहार बन्धु, भारत मित्र,वैंकटेश्वर समाचार-पत्र, दैनिक हिन्दुस्तान, व्यापार सिंधु आदि पत्र-पत्रिकाओं में गहमरी जी ने अपना लेखनी चलाई और समय-समय पर सम्पादनभार भी सम्भालते रहे। ।

विज्ञान ने तो जासूसी को बहुत सरल बना दिया है। पर केवल समझबूझ और चौकस आँखे ही सफलता देती है। गहमरी जी के उपन्यास कहानियों में विज्ञान से जुड़े तथ्य कम नजर आती हैं, लेकिन बुनियादी विषयों से परिपूर्ण होने के कारण उनके रचनाएँ लोकप्रिय रहा है। आज जासूस कार्य एक देश के अंतःकरण समस्याओं को सफलतापूर्वक हल करने के लिए विश्व के हर कोने में जासूस अपने काम को अंजाम देने और देश की सुरक्षा के लिए कार्यरत हैं। जासूस अपनी होशियारी व चुस्त नजर के अलावा वर्तमान समय में स्वचालित उपकरणों तथा छिपे माइक्रोफोन, टेपरिकार्डर, छोटे कैमरे व ट्रांसमीटर आदि का प्रयोग करते हैं और अपने सुरक्षा के लिए देशी-विदेशी हथियारों का भी प्रयोग करते हैं। इन सभी सामग्री के सहायता से ही शातिर अपराधी पकड़ा जाता है।

प्राचीन काल से ही गुप्तचर चलन में है। पर काव्य में आधुनिक युग में अवतरित हुआ है, फिर समय के साथ चलकर जासूसी उपन्यासकारों ने भी अपने जासूस को अनोखी भाषाओं का इस्तेमाल करना काव्य में दिखाया है। आधुनिकता के इस दौर में जासूसी भाषा के लिए हरदिन नए नए कोड बनते रहते हैं। जासूस के पहनावे तक भी या उनके जूतों के लेश बान्धने के तकनीक में भी गुप्त सूचनाएं मजदूत होता है। जासूसी के लिए अन्य साधनों के अतिरिक्त पशु-पक्षियों का उपयोग भी बखुबी किया जाता है और उनके भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। क्या आप जानते हैं कि कुत्तों ने भी बड़े-बड़े अपराधी पकड़वाए है और बहुत सी गुत्थियों को सुलझाया है।

हिन्दी साहित्य में गोपालराम गहमरी उपेक्षित है। कई विधाओं में उन्होंने प्रचुर साहित्य लिखा। उन पर एक जासूसी लेखक का ठप्पा लगाकर उनके पूरे रचनाकर्म से ही हमारे कथित आलोचकों ने किनारा कर लिया, जैसे ये जासूसी उपन्यास घोर पाप हो।फिर धीरे-धीरे उन्हें जान-बुझकर बिसरा दिया गया, लेकिन अब फिर से उनके साहित्य खोज होने लगी है। वर्तमान समय के जासूसी कार्य उनके काव्य में कम परिलक्षित होते है, पर समय के साथ उन्होंने भी अपने समय की जो व्यवस्था थी, उनको पाठकों के सामने अपने काव्य के द्वारा लाने में सफल हुए हैं। आज भी लोग जासूसी विधा को भूले नहीं है और न ही गहमरी जी को भूले होंगे!!क्योंकि जासूसी अब हर देश के सुरक्षा के लिए कार्यरत होने लगे।अपने तथा राष्ट्र के सुरक्षा के लिए जासूसी का प्रसंग आज प्रासंगिक नजर आते हैं, उसी तरह गोपालराम गहमरी के जासूसी कहानी उपन्यासों में भी वर्तमान पाठक को नजर गढ़ना चाहिए।

निष्कर्ष

साहित्यिक जगत में कदाचित ही कोई होगा जो गोपालराम गहमरी के नाम से परिचित न हो। गहमरीजी अपने समय में ही अच्छी ख्याति प्राप्त कर चुके थे । हिन्दी साहित्य और पत्रकारिता के विकास में गहमरीजी का अतुलनीय और अविस्मरणीय योगदान है । गहमरीजी की हिन्दी सेवाओं कि सराहना पंडित रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के इतिहास में मुक्त कंठ से की है। आपने जासूसी साहित्य के निर्माण के साथ ही हिन्दी गद्य साहित्य के विकास में अभूतपूर्व सहयोग प्रदान किया है। गहमरीजी के जासूसी उपन्यास हिन्दी साहित्य के अमूल्य-निधि हो गए है। अपने गहमर से 'जासूस' पत्र निकाला, जो आपकी सुकीर्ति को चमत्कृत कर हिन्दी गद्य के निर्माण में सराहनीय सहयोग दे सका। इस पत्र के सम्पादन के साथ ही आपने छोटी बड़ी मिलाकर २०४ पुस्तकें लिखी और बांग्ला से अनुवाद की हैं, जिनमें ८८ उपन्यास, ६ नाटक और ६ कहानियों का संग्रह नितांत मौलिक है। साहित्यिक सेवा ही आपका मुख्य व्यवसाय था। सरल और सबोध हिन्दी जो सर्वसाधारण द्वारा ग्राह्य हो उसका प्रचार करना आपका ध्येय था। आपकी वर्णन शैली में जादू था, जिसका एकबार के रसास्वादन से तृप्ति न होती थी।लोग आपकी रचनाओं को अंत तक पढ़ के ही दम लेते थे । आपकी रचनाओं द्वारा खड़ीबोली के विकास में बड़ा ही सहयोग मिल है ।।

संदर्भ ग्रंथ

1. गोपालराम गहमरी प्रसिद्ध जासूसी कहानियाँ (सं: संजय कृष्ण, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली-२०१७)
2. गोपालराम गहमरी जासूसी कहानियाँ (सं: संजय कृष्ण, प्रभात पेपरबेकस प्रकाशन, नई दिल्ली-२०१९)
3. जासूसी की रोचक और रोमांचक दुनिया-राकेश नाथ
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

5. प्रेमचंदपूर्व हिन्दी उपन्यास- डॉ. कैलाश प्रकाश (हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली)
6. हिन्दी के पहले जासूसी कथाकार गोपालराम गहमरी के संस्मरण (विक्लप प्रकाशन, दिल्ली-२०१५)
7. हंसराज की डायरी-गोपालराम गहमरी, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग,१९३१
8. हैहय क्षतिय मित्र-बैजनाथ सिंह 'साहित्य-रत्न'
9. हिन्दी पत्र -पत्रिकाएं: जासूस, सरस्वती, बालक, आज, गहमर गौरव आदि।